स्वतंत्र काल में बिहार के शैक्षणिक विकास में अनुग्रह नारायण सिंह की भूमिका

बिपिन कुमार सिंह, एस.के.झा

शोध छात्र

विश्वविधालय इतिहास विभाग

बाबासाहब भीमराव अम्बेडकर बिहार विश्वविधालय, मुजफ्फरपुर

सम्पूर्ण शैक्षणिक प्रक्रिया का आविर्भाव बिहार के छात्र–आन्दोलन से हुआ। इसके उद्‌देश्य दूरगामी है। भारतीय लोकतंत्र को वास्तविक तथा सुदृढ़ बनाना, जनता कमा सच्चा राज कायम करना, समाज से अन्याय, शोषण आदि का अन्त करना, एक नैतिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक करना, नया बिहार बनाना और अन्ततोगत्वा नया भारत बनाना ।

1. शैक्षणिक विकास :– अनुग्रह नारायण सिंह भारतीय समाज से जुड़ी आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक समस्याओं से अवगत थे। वे लोकतंत्र की दुर्बलताओं से भली–भाँति परिचित थे। वे कहते थे–"हमारा लोकतंत्र बहुत संकुचित आधार पर टिका हुआ है, यह एक ऐसे उल्टे पिरामिड की तरह है, जो सिर के बल खड़ा है........ केवल यह तथ्य कि हर बालिग भारतीय को वोट देने का हक है, शासन पद्धति के पिरामिड को व्यापक आधार नहीं दे देता है। करोड़ों की संख्या में बिखरे हुए व्यक्तिगत मतदाता बालू के कणों के ऐसे ढेर की तरह हैं, जो किसी भी संरचना क बुनियाद नहीं बन सकते हैं। इन कणों को ईटों का रूप देने के लिए मिलाना होगा या कंकरीट जैसे साँचे में ढालना होगा, तभी ये नींव के पत्थर का रूप ग्रहण कर सकेंगे।

शिक्षा का सीधा सम्बन्ध समाज रचना से है। शिक्षा के जो मूल तत्व हैं। जैसे नैतिक शिक्षा व आध्यात्मिक शिक्षा से तो वैसे ही रहेंगे किन्तु अन्य मामलों में

परिस्थिति के अनुरूप लोगों को शिक्षित करना होगा। शिक्षा ऐसी हानी चाहिए जो जीवन के लिए उपयोगी सिद्ध हो तथा युवाओं को आत्मनिर्भर बनाा सके। शिक्षा–प्रणाली को इस तरह गठित किया जाए कि उसका सीधा सम्बन्ध देश की समस्याओं से जुड़ सके। शिक्षा विद्यार्थियों को इस योग्य बना सके कि वे किसी भी प्रश्न पर बद्धिपूर्वक विचार कर सकें। ऐसी व्यवस्था हो कि न्यूनतम शिक्षा सभी को प्राप्त हो सकें, जो विद्यार्थियों के नैतिक व अध्यिात्मिक प्रगति में सहायक हो तथा व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करने वाली हों। इस सम्बन्ध में गाँधी जी का विचार था कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जिससे विद्यार्थी स्वावलम्बी बनें, व उनका आत्मविश्वास बढ़े । अतः शिक्षा के ढाँचे में परिवर्तन लाना होगा।

अनुग्रह नारायण सिंह के अनुसार शिक्षा में कोई मौलिक परिवर्तन तब तक सम्भव नहीं है जब तक कि उपाधियाँ समाप्त न कर दी जाएं और उपाधियों का रोजगार से नाता तोड़ा न जाए। अतः ऐसा व्यवस्था की जानी चाहिये कि भविष्य में मात्र डिग्री के आधार पर किसी को नौकरी न मिल सकें। व्यक्ति की योग्यता उसकी डिग्री से नहीं आँकी जानी चाहिये। उम्मीदवार की योग्यता व कार्यकुशलता को परखने का कार्य नौकरी देने वाल का हो।

अनुग्रह नारायण सिंह का सविचार था कि प्रतयेक व्यक्ति को न्यूनतम शिक्षा उपलब्ध होनी चाहिए जो अज्ञानता व निरक्षरता का समूल नाश कर सके। शहर ररवा में भिन्न–भिन्न होने के कारण शहर व गाँव की शिक्षा का धरातल भी समान नहीं हो सकता। इस प्रकार शिक्षा का सीधा सम्बन्ध देश की समस्याओं से होना चाहिये। शिक्षा श्रममूलक हो व न्यूनतम शिक्षा सभी को प्राप्त हो सकें। यही शिक्षा में क्रान्ति का पहला चरण है।

संदर्भ–सूची :–

.1. अनुग्रह नारायण सिंह : माई टोटल रिवोल्यूशन, एवरी मेंस, दि–22 पृष्ठ 74

2. अनुग्रह नारायण सिंहः राजनैतिक क्रान्ति के लिए आहवान, पृष्ठ–41

3. वी0एन0 सिंहः भारतीय सामाजिक चिन्तन, पृष्ठ–316

4. अनुग्रह नारायण सिंह उद्धष्त, अनुग्रह नारायण सिंह पृष्ठ–103

5. पूर्वोक्त पृष्ठ–585

6. लोक दर्षिट में जय प्रकाश, में उद्धष्त , पृष्ठ–85

7. अनुग्रह नारायण सिंह हमारी नजरों मे'' द रेडिकल ह्सूमेनिस्ट, मार्च, 1978, पृष्ठ–10

8. अनुग्रह नारायण सिंह, लोक–स्वराज्य, (सर्व सेवा संघ, वाराणसी) जुलाई, 1999, पृष्ठ–10

9. अनुग्रह नारायण सिंह , राजनैतिक क्रान्ति, (सर्व सेवा संघ, वाराणसी) सितम्बर, 1999

10. पूर्वोक्त, पृष्ठ–27